શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૨૮૫
1205

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

1205



# अधिक-मास-दर्पण.

हस्त्र फरमायेश–जनाब–फेजमाब

जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा–विद्यासागर

न्यायरत्नमहाराज

## शांतिविजयजी.

प्रकाशक,

शेठ सरुपचंदजी पुनमचंदजी नानावटी,

साकीन, पेथापुर गुजरात–हाल मुकाम बंबई.

सं० १९७५. सन १९१८.

–मुफ्त–

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the "Nirnaya-sagar" Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.
Published by Seth Sarupchandji Punamchandji Nanavati, Seth Premchand Kalyanchand Javeri's House, Dhanji Street, Bombay No. 3.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

# दिबाचा.

इस किताबको अवलसे अखीरतक पढलेना चाहिये, कइ महाशय ऐसे है जो पन्ने दो पन्ने बांचकर किताबको बेंकार समजकर रख देते है. मगर यह बात बेहत्तर नही. चर्चाकी किताब पढनेसे आदमीकों होशियारी आती है. इस किताबमें अधिकमहिनेके बारेमें इबारत लिखी हुइ है, इसलिये इसका नाम अधिकमासदर्पण रखा है. इस किताबमें अवल सभा करनेका तरीका शास्त्रार्थ करनेके नियम बतला दिये है. मेरा और खरतरगछके मुनि मणिसागरजीका मिलना दादर मुकामपर और दुसरीदफे वालकेसरमें हुवा था, उसका बयान इसमें दर्ज है. जैन मुनिके उत्सर्गमार्ग और अपवाद मार्गकी नव कलमें इसमें बतला दिइ है. चंद्रसंवत्सर और सूर्यसंवत्सरका मेल मिलानेके लिये बीचमेंसे अधिकमहिना निकालना पडता है. इसकी कुल हकीकत इस किताबमें रोशन है. मेरी बनाइ हुइ किताब मानवधर्म संहिताके लेखकी अधिकमहिनेके बारेमें सत्यता इसमें बयान किइ है. तीर्थंकर महाबीर स्वामीके पांच कल्याणिक मानना या छह मानना इसका बयान इसमें उमदातौरसे दिया है. पर्यूषणपर्वकी संवत्सरी पंचमीकी करना या चतुर्थीकी? दादाजीका प्रसाद खाना या केसे करना शास्त्रार्थके लिये दो दफे जाहिर सूचना वगेराके तमाम हालात इसमें दर्ज है, इस किताबकी कापी करनेमें यतिवर्य श्रीयुत मनसुखलालजीने अछी मदद दिइ है. और किताब छपवाकर जाहिर करानेमें शेठ सरुपचंदजी पुनमचंदजी साकीन पेंथापूर मुल्क गुजरात हाल मुकाम बंबइने द्रव्यकी मदद किइ है. इस किताबको आपलोग पढे और सचका इम्तिहान करे.

मुकाम-थाणा } ब-कलम-जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा विद्यासागर-
मुल्क-कोकन. } न्यायरत्न-मुनि-शांतिविजय.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

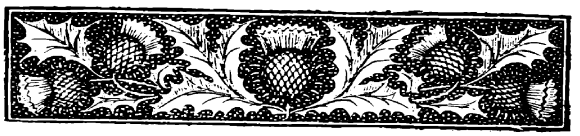

# अधिक-मास-दर्पण.

जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा–विद्यासागर–न्यायरत्न
महाराज शांतिविजयजी तर्फसे–मुकाम
थाना–कोकन.

दोहा.

नमुं देव अरिहंतको, गुरु नमुं निर्ग्रंथ
स्याद्वादवानी नमुं, यही मुक्तिका पंथ ॥ १ ॥
सुनकर वानी जैनकी, क्यौं न धरे मनधीर ।
धर्मविना इस जीवकी, कौन हरे भवपीर ॥ २ ॥

१ इस किताबके तयार करनेका सबब यह है कि-खरतर गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीने बंबइसे विज्ञापन नंबर सातमा–अपने हस्ताक्षरकी सहीसे लिखकर प्रकाशक हिरालालजीके नामसे जाहिर किया है. उसमे लिखा है. शांतिविजयजी सावधान ! शास्त्रार्थके लिये–जल्दी तयार हो.

जबाब—शांतिविजयजी हमेशां सावधान है. जभी तो आपके लेखोंपर–पर्यूषणपर्वनिर्णय-और-अधिकमासनिर्णय-कितावें बनाकर बजरीये प्रकाशकके जाहिर करवाइ है. आप उन दोनों किताबोंके दरेक बयानपर पुरेपुरा जबाब दीजिये ! एक छोटासा विज्ञापन नंबर सातमा लिखकर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाहिर करवाया-जिसमें एक भी जैनशास्त्रका पाठ नही दिया, इतनेसे मेरी किताबका जबाब नही हो सकता. अब शास्त्रार्थका जबाब सुनिये. शास्त्रार्थके लिये सभा करना दोनों पक्षके संघका काम है. क्योंकि-यह चर्चा-जैनश्वेतांबर-संघके फायदेकी है, किसी एकके घरकी नही, तपगछवाले दुसरे भादवेमें पर्यूषणपर्व करनेके पक्षमे हैं, खरतरगछ और अंचलगछवाले पहले भादवेमे पर्यूषणपर्व करनेवाले हैं. दोनों पक्षवाले सलाहकरके अपने अपने गछके विद्वान् मुनिजनोंको आमंत्रण करे. जिससे पीछेसे कोइ एसा-न-कहसके कि-हम इस बातमें सामील नहीं, जो जो मुनिराज-न-आसकते हो-तों अपना अपना अभिप्राय लिखभेजें कि-हमको इस सभामें जो कुछ निश्चय होगा वो-मंजूर है.

२ सभामें वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक-और साक्षी होने चाहिये, वादी-प्रतिवादी सामसामने बेठे, सभादक्ष यानी संस्कृत-प्राकृत विद्याके पढे हुवे पंडित-वादी-प्रतिवादीकी दलिलें लिखते रहें. दंडनायक कहनेसें राज्यकी तर्फसें कोइ अपसर अैसे अधिकारवाले सभामें आने चाहिये जो-बेइन्साफकी बात बोले उसको बंद करे. साक्षी कहनेसे पठित विद्वान् षट्मतके जाननेवाले-जैन-या-कोइ दुसरे महाशय-मुकरर किये जाय, जो दोनोंपक्षके लिखाणको बांचकर इन्साफ देवें, और उनका नाम पहलेसे जाहिर करना चाहिये कि-इस सभामें अमुक महाशय मध्यस्थ रहेंगे, और इस बातका भी पहलेसे निर्णय होना चाहिये कि-तपगछ-खरतरगछ-निकसे पेस्तरके-सूत्र-सिद्धांत मंजूर रहे, और उनहीके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पाठसे शास्त्रार्थ करना, जिस पक्षवालोंकी जित होवे वो-अपना खर्चा प्रतिपक्षवालोंसे लेवे सभा करना-तो-ऐसी करना, नही तो फिर अपने अपने पक्षवाले एसा कहेंगे, हमारा पक्ष तेज है, इसमे कोइ नतीजा-नही निकलेगा, उपरलिखे मुजब दोनोंपक्षके संघकी सलाहसे सभा होवे-और संघका आमंत्रण आवे-तो-में-अधिकमासके बारेमे शास्त्रार्थके लिये आनेको तयार-हूं, कोइ एक जैनमुनि कोइ श्रावक शास्त्रार्थके लिये आमंत्रण करे-तो-यह बात मंजूर नही हो सकती, संघका काम संघकी सलाहसे होना चाहिये.

३ आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर तीसरेमें पुस्तकोंके बारेमें लिखते हैं-मेरेको इधरके जैनी पाटन-भावनगर-खंबायत-बडोदा-सुरत वगेरा शहरोंके ज्ञान भंडारके रक्षकलोक पक्षपातसे-या अपनी भूल प्रगट हो जानेके भयसे-या किसी मुनिके मनाइ करनेसे बहुत वार लिखनेपर भी नही भेजते.

जवाब—आपकों इधरके जैनी-पुस्तक नही भेजते-तो इसमें कोइ क्या करे? अपने लिये पुस्तक चाहे वहांसे मंगवालो, जैन पुस्तक बंबइमें भी होवेंगे, पुस्तकोंकी कौन कमी है, और फिर आप लिखते हों-ज्ञानभंडारके रक्षकलोग पक्षपातसे-या अपनी भूल प्रगट हो जानेके भयसे पुस्तक नही भेजते, जवाबमें मालुम हो, विना सभा-या शास्त्रार्थ किये किसकी भूल है, इसकी खातरी कौन करेगा, अपने मन-सेही अपनी बात सच समजना और दुसरोंकी भूल कहना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृथा है, दुसरे जैन मुनि-उन-ज्ञानभंडारके रक्षकोंको मना क्यौं करे, जैनपुस्तक दुसरे शहरोंके जैनपुस्तकालयोंमें मौजूद है, जहांसे मिले आप मंगवा लीजिये.

४ फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी-अपने विज्ञापन नंबर सातमें तेहरीर करते हैं, आपकी बनाइ हुइ पर्यूषणपर्व निर्णयकी शास्त्रकारोंके अभिप्राय विरुद्ध-जिनाज्ञा-बाहिर और कुयुक्तियोंसे भोले जीवोंकों उन्मार्गमें गेरने वाली है.

जवाब—मेरी किताबमें कौनसी बात शास्त्रकारोंके अभिप्रायसे विरुद्धथी- जबतक शास्त्रसबुतसे बतला सकते नहीं, एसा कहना फिजहुल है, आपको मुनासिब था, पूर्वपक्ष-लिखकर उत्तरपक्षमें जैनशास्त्रका पाठ देना, और फिर कहना था कि-देखिये! यह बात विरुद्ध है, जिनाज्ञाबाहर कौनसा लेख था-बतलाया क्यौं नहीं? और कौन कौनसी कुयुक्तियें थी-जो-भोले जीवोंको उन्मार्गमें गेरनेवाली थी जैनशास्त्रके पाठ देकर बतलाना चाहिये था, जबतक एसा बतलाते नही तबतक शास्त्रविरुद्ध कहना बेहत्तर नही, आपके कहनेसे मेरी किताब शास्त्रकारोंके अभिप्रायसे विरुद्ध नही हो सकती, शांतिविजयजी किसीके लेखका जबाब-न देवे-और मौनकरके बेठे रहे-यह-कभी-न-होगा, जिसके पास शास्त्रसबुतसे जबाब देनेकी ताकत है-वो-मौनकरके क्यौं बेठे.

५ जब-मैं-पुनेका चौमासाकरके संवत् (१९७४) के पौष महिनेमें दादर-मुकामपर आया था, और-शेठ-हेमचंदजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अमरचंदजीके बंगलेमें ठहराथा, बंबइ वालकेश्वरसे खरतर-गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीने एक आदमीके साथ मेरेपास एक चीठी लिखकर भेजी थी, उसमे लिखा था, मेने आपका आना दादरमें सुना है, इससें आपकों में सूचना देता हुं कि-आपने पर्यूषणपर्वनिर्णय-और अधिक-मासनिर्णय दोनों पुस्तकोंमें बहुत जगह शास्त्रविरुद्ध होकर उत्सूत्रप्ररूपणारूप लिखा है, शास्त्रार्थ किये विना चले जाओगे तो जूठे समजे जाओगे.

जवाब—विना शास्त्रसबुत मेरे लेखको शास्त्रविरुद्ध कहदेना कौन अकलमंद मंजूर करेंगे? मेरी किताबके दरेक बयानको लिखकर जैनशास्त्रोंके पाठसे पुरेपुरा जबाब दीजिये, विना जबाब दिये एसा कह देना मुनासिब नही. शास्त्रार्थके लिये सभाकातरीका इस किताबकी शुरुआतमें पहेली-दूसरी कलममें लिख दिया है उसको पढ लीजिये. यह चर्चा जैनश्वेतांबरसंघके फायदेकी है. किसी एकके घरकी नही, दोनोंपक्षके संघकी सलाहसे सभा होना चाहिये, संघका आमंत्रण मेरेपर आवे तो-तपगछवालोंकी तर्फसे अधिकमासके बारेमें शास्त्रार्थके लिये आनेको-में-तयार हुं. जाहिर चर्चाके विषयकी हस्ताक्षरसे लिखी हुइ खासगी चिठीका जवाब देना-में-गेरइन्साफ समजता हुं, मेने उस चीठीका जवाब नही दिया. दुसरे रोज आप दादर मुकाम-पर आये, और शेठ-हेमचंदजी अमरचंदजीके बंगलेमें मुझको रुबरु मिले, उसवख्त आपके साथ-श्रीयुत लब्धिमुनिजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और अंचलगछके मुनिश्रीयुत दानसागरजी वगेरा तीन मुनिराज थे, मेने सबके रुबरु आपको कहा था-मेरी बनाइ हुइ किताब पर्यूषणपर्वनिर्णय और अधिकमासनिर्णयमें कौनसी बातें शास्त्रविरुद्ध होकर उत्सूत्रप्ररूपणारूप लिखी हैं, आपने जैनशास्त्रके पाठ देकर बजरीये छापेके जाहिर क्यौं नही किइ? बगेरा बातें हुइ जब आपने कहा था. सबका जवाब दूंगा. फिर उसवख्त मेने यह भी कहा था कि-धर्म-चर्चाकी हरेक बातके निर्णय करनेका यह तरीका है, एक तरीका दोनोंपक्षके जैनसंघकी सलाहसे वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष दंडनायक और साक्षीके जरीये सभा भरना, और शास्त्रार्थ करना, सभा इस लिये किइ जाति है कि बोलने-वाले बोलकर फिर बदल न सके, दूसरा तरीका बजरीये छापेके मेरे लेखका जवाब आपदेवे, और आपके लेखका जवाब में दूं. ये बातें मेने उसवख्त कहीं थीं, आपको याद होगी, फिर आप दुफेरको मेरे पाससे उठकर दादरके जैन-मंदिरके पास जहां ठहरेथे, वहां गये. शामको फिर आप और श्रीयुत लब्धिमुनिजी मेरेपास तशरीफ लाये, और दुसरे रौज दुफेरतक रहे थे, ज्ञानकी बातें हुइं थीं. और फिर बंबइ लालबागको गये थे, में मुकाम दादरमें (२०) रौजतक सभाके लिये ठहरा, मगर दोनोंपक्षके संघकी सलाहसे सभा हुइ नहीं, फिर में मुकाम दादरसे रवाना होकर तीर्थ झग-डिया-पानसर और भोयणीतर्फ जियारतको गया.

६ आगे खरतरगछके मुनिश्रीयुत-मणिसागरजी अपने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विज्ञापन नंबर सातमे इस मजमूनको पेश करते हैं, वालकेश्वरमें जब हमारे गुरुजीके साथ आपकी मुलाकात हुइ थी, तब भी आपने झगडिया वगेरा तीर्थकी यात्रा जाकर आये बाद शास्त्रार्थ करनेको मंजूर किया था, सो आप यात्राकरके आगये, अब आमने सामने या लेखद्वारा-वा सभामें आपकी इच्छा हो वैसे शास्त्रार्थ करना मंजूर कीजिये.

जवाब—शास्त्रार्थके लिये मुजे कोइ इनकार नही, मगर दोनोंपक्षके जैनसंघकी सलाहसे सभा हो, जैसा कि–इस किताबकी शुरुमे पहेली दुसरी कलममें लिखा है, नही तो अपने अपने पक्षवाले कहेंगे हमारा पक्ष तेज है. इससे कोइ नतीजा न निकलेगा, यह चर्चा संघके लिये है. जब दोनोंपक्षके संघ शामील नही हुवे तो फिर शास्त्रार्थ करनेका फायदा क्या हुवा ? में तीर्थ झगडिया पानसर और भोयणी वगेरा तीर्थोंकी जियारतकरके सुरत होता हुवा दादर टेशन उतरकर यहां थाणे आया. और चार महिनेसें राहदेख रहा हुं, और बंबईके नजदीक ठहरा हुं, मगर आजतक सभाका तरीका मालुम हुवा नहीं, कोइ एक शख्स चाहे में सभा करुं तो यह बनसके नहीं, संघका काम संघकी सलाहसे होना चाहिये.

७ बंबइ-वालकेश्वरमें आपके और आपके गुरुजीके साथ जब मेरी मुलाकात हुइ थी, उसवख्त जो कुछ बातें हुइं थीं, यहां लिखता हुं, सुनिये ! गतवर्समें जब मेरा जाना दादर मुकामसे वालकेश्वरके जैनमंदिरमें हुवा था, उसवख्त बाबू-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अमीचंदजी पंनालालजी जहोरीके जैनमंदिरके पास उपाश्रयमें आप और आपके गुरुजी वहां तशरीफ लाये थे, जब में जिनमंदिरके दर्शनकरके बहार निकला, आप उपाश्रयके बहार आनकर मुजको मिले थे, और कहा था, भीतर चलिये, में भीतर आया था, उसवख्त यतिवर्य-श्रीयुत मनसुखलालजी और श्रावक चुनिलालजीकानुनी वगेरा भी शाथ थे.

८ अवल स्वागत वगेराकी बातें हुइ फिर मेने कहा, पुनेसे तीर्थ झगडिया-पानसर वगेराकी जियारतके लिये चला हूं. फिर जैनमुनिजनोंके बारेमें बातें चलीं थीं, जैनशास्त्रोंमें जैन मुनियोंके और श्रावकोंके लिये दो तरहके मार्ग तीर्थंकर देवोने फरमाये, एक उत्सर्गमार्ग दुसरा अपवादमार्ग उत्सर्ग मार्गका दूसरा नाम कठिनमार्ग और अपवादमार्गका दुसरा नाम शिथिलमार्ग है. उत्सर्गमार्गमें जैनके पंचमहाव्रतधारी क्रियावान् साधु या साधवीकों विहारमें भी किसीकी सहायता नही लेना चाहिये, असहायक होकर विहार करना चाहिये, अगर कोइ जैनमुनि तीर्थसमेत शिखरजीकी जियारत जाते वख्त या बनारस जैनपाठशाला वगेरामें विद्या पढनेके लिये जातेसमय या मुल्क. मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, बंगाल, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेश या दक्खनहैदराबादतर्फ जातेवख्त श्रावक-श्राविका या नोकर चाकर साथ चले उन श्रावक-श्राविका और नोकरचाकरोंके लिये बेलगाडी भी साथ रहे, जैनमुनि खुद जानते होवे की ये सब लोग हमारे विहारके सबब साथ चले हैं, और एसी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहायता लेवे तो यह बात मुताबिक जैनशास्त्रके उत्सर्गमार्गमें समजना या अपवादमार्गमें ? इसपर कोइ कहे जमाना पहले जैसा नही रहा, शरीरकी ताकत कम हो गइ इस लिये जमाने हालमें जैनमुनिकों इरादेधर्मके एसी सहायता लेनी पडती है, तो जवाबमें मालुम हो यह उत्सर्गमार्ग नही रहा, शिथिल मार्ग कहना चाहिये, शिथिलमार्गपर चलकर कोइ अपनी धर्मक्रियाकी महत्वता करे तो यह मुनासिब नही, जहांतक शरीरकी मूर्छा प्रबल रहे उत्सर्गमार्गपर चलना दुसवार है, अगर विहारके वख्तभी असहायक होकर विहार करे तो अछी बात है.

कलम दूसरी—जैनशास्त्रोंमे जैनमुनिको नवकल्पी विहार करना कहा. अगर कोइ जैनमुनि या जैनसाधवी विद्या पढनेके लिये किसी गांवनगरमें या जैनपाठशाला वगेरामे दो दो चारचार वर्सतक ठहरे तो बतलाइ ये ! यह बात उत्सर्गमार्गमें समजना या अपवादमार्गमें ? अगर कहा जाय, इरादे विद्यापढनेके लिये एक गांवनगरमें ज्यादा ठहरना कोइ हर्ज नही, तो सौंचो ! विद्यापढनेके लिये विहारमें शिथिलमार्गका सहारा लेना पडा या नही ? फरमान तीर्थंकर गणधरोंका देखो तो विद्या भी पढते रहना, और नवकल्पी विहारभी करते रहना चाहिये, पंचमहाव्रतधारी उत्कृष्ट क्रियावान्को विद्यापढनेके लिये चारित्रमें शिथिलता क्यौं करना ? कलम तीसरी, जैनशास्त्रोंमें लिखा है, जैनमुनिको उत्सर्गमार्गमें उद्यान बनखंड बागबगीचे या पहाडोंकी गुफामे रहना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चाहिये, आजकलके मनुष्योंकी एसी ताकत नही रही, इस लिये इरादे देहरक्षा और संयमरक्षाके गांवनगरमें रहनेका शिथिलमार्ग इख्तियार करना पडता है, कलम चौथी, जैनशास्त्र उत्तराध्ययनमें लिखा है, जैनमुनिको और जैनसाधवीकों उत्सर्गमार्गमें दिवसके तिसरे प्रहर गोचरी जाना.

पाठ सूत्र उत्तराध्ययनका–अध्ययन ३६, गाथा १२.

पढमं पोरिसि सझायं, बियियां झाणं झियायइ ।
तइयाए भिखायरियं, चउथी भुजोवि सझायं ॥

पहले प्रहरमें स्वाध्याय करे दुसरे प्रहरमें ध्यान करे और तीसरे प्रहरमें भिक्षाको जावे, अगर कोइ इस दलिलको पेंशकरे दिवसके तीसरे प्रहरमें भिक्षाको जायगें तो भिक्षा मिलना दुसवार होगा, तो फिर कुवुल करना चाहिये कि आजकल उत्सर्गमार्गको छोडकर अपवादमार्गमें चलना पडता है, और दिवसके पहले प्रहरमें चाहदुधकी गवेषणा करना पडती है, दिवसके दुसरे प्रहरमें भिक्षाको जाना पडता है, अगर कोइ जैनमुनि उत्सर्गमार्गमें चलना चाहे तो दिवसके तीसरे प्रहर भिक्षाको जावे, और जो कुछ निरसआहार मिले उसपर संतोष करे, विहारके वख्तभी कंतानके मौजे न पहने.

कलम पांचमी–दशवैकालिक सूत्रके छठे अध्ययनमें लिखा है, जैनमुनि दिनमें एकदफे आहार खावे, उसका पाठ यह है.

अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्वबुद्धिहिं वन्निअं ।
जायलज्जा समा वित्ति, एगभत्तं च भोयणं ॥ २३ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat　www.umaragyanbhandar.com

देखिये! जैनमुनिको एकदफे आहार खाना कहा, इसपर अगर कहा जाय शरीरकी स्थिति पहले जैसी नही रही, इस लिये दिनमे दोदफे आहार खाना पडता है, और सवेरे चाहदुधका सहारा लेना पडता है, तो सबुत हुवा इरादे शरीरस्थितिके आजकल शिथिलमार्ग इख्तियार करना पडता है. जैनशास्त्रमें जैनमुनिको दिनमें नींदलेना नही कहा. क्षुधा तृषा वगेरा बाइस परिसह सहन करना कहा. और शरीरपर ममत्वभावका त्याग करना फरमाया, चाहे कोइ जैनमुनि हो साधवी हो श्रावक हो या श्राविका हो जबजब उपवासव्रत करे तो पहले रौज एकाशना करे और पारनेके रौजभी एकाशना करे आजकल एसा बरताव बहुत थोडे शख्श करते होंगे एसा बरताव करे नही और अपने आपको उत्सर्ग मार्गपर चलनेवाले बोले तो इस बातको जैनशास्त्र कबुल नही करते. कलम छठी—जैनशास्त्रोंमें योग उपधान वहन करना उसका नाम है, जिस जैनशास्त्रका योग वहना हो, उस जैनशास्त्रको मय अर्थके कंठाग्र करे, और श्रावकको जिस जिस सामायिक प्रतिक्रमणके विभागका उपधान वहना हो, उस उस विभागको मय अर्थके कंठाग्र करे. कोरा तप करनेसे योग उपधान हो गया समजना गलत है.

कलम सातमी—जैनशास्त्रोंमें लिखा है, जैनमुनि किसीके लडकेको विना हुक्म उसके वारीशोंके दीक्षा न देवे, अगर कोइ शख्श दीक्षा लेनेका इरादा बतलावे तो जैनमुनि उसके मातापिता वगेरा रिस्तेदारोंको खबर देवे, उनके रिस्तेदार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अगर रुबरु मिलकर जैनमुनिको आज्ञा देवे तो उसको दीक्षा देना मुनासिब है, दीक्षा पालना सहज नही, कलम आठमी, अगर कोइ जैनमुनि आचार्य उपाध्याय गणीप्रवर्तक वगेरा पदवीके धारक बने तो पहले उनको यह सौच लेना चाहिये मेने उस पदवीके गुण हासिल किये है या नही, कलम नवमी, अगर कोइ जैन यतिजी हो तो उनकोभी पंचमहाव्रत पालना चाहिये, जैनशास्त्रोंमें पाठ है, जो शख्श पांच इंद्रियोंको जीते और पंचमहाव्रत पाले उसको जैनयति कहे हैं, तीर्थंकर गणधरोंके दरबारसे छुट नही मिली है कि पंचमहाव्रतसे जुदा बरताव करना. यति मुनि साधु संयमी अणगार श्रमण निर्ग्रंथ ये सब मुनिपदके पर्याय नाम है.

खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीको याद होगा कि उपर लिखी हुइ नव कलमके वारेमें बातें मेरी और आपके गुरुजीकी मुलाकातके वख्त हुइ थीं, उस वख्त जो यतिजी और श्रावक वगेरा साथ थे, उनसेभी दरयाफ्त किया जाय.

९ अगर कोइ जैन मुनि या जैनश्वेतांबर श्रावक एसा कहे कि शांतिविजयजी रैल विहार करते है, इस लिये हम उनको नही मानते, तो जवाबमें मालुम हो जिनकी जैसी मरजी हो, वैसा वरताव करे. शांतिविजयजी किसी बातसे नाखज नही, शांतिविजयजीको माननेवाले जैन समाजमें बहुत हैं, कोइ न माने तो क्या हुवा? शांतिविजयजी रैल विहार करते हैं तो भी शहरबशहरमें जहां जैन समाजकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आबादी है. वहां मय बेंडबाजा वगेरा जुलुसके उनकी पेंश-वाइ करते हैं, उनका व्याख्यान सुनते हैं, चौमासा ठहरा-नेकी मिन्नत करते हैं, रैलकिराया देकर आदमीको साथ भैजते हैं. ताजीम करते हैं, और खिदमत करते हैं, इससे ज्यादा और क्या रुतबा होगा. धर्म और प्रीत जोराजोरी नही होती. शास्त्रार्थ और रैल विहारका क्या संबंध है? जैनशास्त्रोंमें सम्यक्दर्शन ज्ञान और चारित्र ये तीन गुण काबिल अदबके हैं, जिसमें एतकात सबसे बडा कहा, उत्त-राध्ययनसूत्रमें एतकात बडा फरमाया, बाद उसके ज्ञान और तीसरे दर्जे चारित्र कहा, अकेला एतकात मुक्ति दे स-कता है, विना एतकात अकेला चारित्र मुक्ति नही दे सकता, और न इस रुहको फायदा पहुचा सकता, ज्ञान सर्व आराधक कहा और क्रिया देश आराधक कही. मगर शर्त यह है, अगर वो एतकात्तके साथ हो, इसमें कोइ खिलाप जैनशास्त्रके लिखा हो, तो अकलमंद लोग इसपर टीका करे में उसका जवाब दूंगा.

मेनें संवत् ( १९३६ ) में मुल्क पंजाब शहर मलेरकोटमें दीक्षा इख्तियार किइ, बीस वर्सतक मुल्क-ब-मुल्क पैदल सफर किया. संवत् ( १९५६ ) में जब मेरा चौमासा शहर लखनउमें हुवा, तीर्थसमेत शिखरजीकी जियारतके लिये जानेकी तयारी किइ-ब-सवारी रैल सफर करना शुरु किया और वही बरताव अबतक जारी है. जैनसमाजमें जो इज्जत मेरी पहले थी, अबभी है, यूं तो तीर्थंकर देवोंको भी कइ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लोग तीर्थंकर तरीके नही मानते थे, तो आजकल मुजे कोइ जैन मुनितरीके न माने तो कौन ताज्जुबकी बात है? मानना न मानना अपनी मरजीके ताल्लुक है, शांतिविजयजीको जो जो श्रावक मुनितरीके मानकर वंदन करते हैं, उनको धर्मलाभ देते हैं, जो जो श्रावक नही मानते, और वंदन नही करते, उनको धर्मलाभ नही देते, जैनशास्त्रोंमें जैनमुनिके जो जो गुण और व्रत बयान किये हैं. और इसीतरह श्रावकके भी जो जो गुण व्रत लिखे हैं उसपर बरताव करनेवालोंको जैनमें मुनि और श्रावकतरीके मानना मुनासिब फरमाया. जैनशास्त्रोंका जो कुछ फरमान था, इतनेमें आगया अकलमंद लोग गौर फरमावे.

१० आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर सातमें तेहरीर करते हैं, मेरे बनायेहुवे लघु पर्यूषणानिर्णयके प्रथम अंकके सब लेखोंका न्यायसे पुरेपुरा उत्तर देनेकी आपमें ताकात नही. यदि होती तो अधिक मासमे सूर्य चार न होवे, वनस्पति न फुले, वगेरा बातोका खुलासा क्यौं नही दिया?

जवाब—अगर अधिकमासमें सूर्य चाल चलता है और वनस्पति फुलती है, इस सबबसे आप अधिकमासको गिनतीमे लेना चाहते हो, तो आपलोग खुद जब दो आषाढ आवे पहले आषाढको चातुर्मासिक व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमे क्यौं नही लेते? दो पौष महिने आवे जब तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजका जन्म कल्याणिक एक पौषमें करते हो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

या दोनोंमे? अगर एक पौषमें करते हो तो कल्याणिकपर्वकी अपेक्षा एक पौषको आपलोगोंने गिनतीमेसे क्यौं छोडा? अन्यमतके पंचांगके आधारसे जब दो चैत आवे सिद्ध चक्रजीका तप एक चैतमें करते हो, और एक चैतको क्यौं छोड देते हो? जब दो वैशाख महिने आवे अक्षयतृतीयापर्व एकमें करते हो या दोनोंमे? अगर एकमें करते हो तो एक वैशाखको आपलोग गिनतीमेंसे क्यौं छोड देते हो? इसका जबाव दीजिये क्या! इन दिनोमें सूर्य चलता नही है? क्या! वनस्पति फुलती नही हैं? क्या इन महिनोंमे पाप नही लगता? इसका भी जवाब दीजिये! जवाब देनेकी ताकात किसमें नही है मेरेमें या आपमें? दुसरेकों कहते हो अधिक महिना गिनतीमें लेना, और आप लेते नही. इसकी क्या वजह है? अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह महिनेका होता है, और निशीथचूर्णिमें अधिक महिनेको कालचूला कही, कहते हो, मगर जिस बातकी चर्चा चलती है उसके लिये क्या जबाब देते हो? चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमे लेना एसा किस जैनशास्त्रका पाठ है? पूर्वपक्षमें पाठ देते जाइये और उत्तरपक्षमे मेरेसे पाठ लेते जाइये, जबतक पूर्वपक्षमें पाठ जाहिर न हो तबतक उत्तरपक्षमें पाठ जाहिर करना गेरइन्साफ है बस! यह बात मुद्देकी है, अगर इसको अच्छी तरहसे समज लिइ जाय तो कोइ शक पैदा न होगा. में खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीसे पुछता हुं आप अगर अधिक महिना दिनोंकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गिनतीमे लेनेका पक्ष करते हो तो गयेवर्स दो भादवे मान-कर पांच महिनेका चौमासा क्यौं माना? और चौमासी प्रतिक्रमण पांचमें महिनेके अंतरेसे क्यौं किया? एक महिने पहलेसे चौमासी प्रतिक्रमण करना था. और एक महिने पहलेही चौमासा खतम करके विहार कर देना था, चौमासी प्रतिक्रमण पांचमें महिने किया फिर अधिक महिना गिन-तीम लिया कहां सबुत हुवा? जेसा कहना वेसा बरताव करना चाहिये.

११ फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने बनायेहुवे लघुपर्यूषण निर्णयग्रंथके पृष्ठ (२५) पर इस दलिलको पेंश करते हैं, दुसरे आषाड में चौमासी प्रतिक्रमण करनेसे अधिक मास गिनतीमेसे निषेध नही हो सकता.

(जवाब) दुसरे आषाढमें चौमासी प्रतिक्रमण करनेसे चातुर्मासिक व्रत नियमकी अपेक्षा आपकेही कथनसे निषेध हो गया, अगर कहाजाय पहेला आषाड ग्रीष्मऋतुमें चला गया तो फिर आपके कहनेसे ग्रीष्मऋतुका चौमासा पांच महिनेका हो गया, और चौमासा चार महिनेका होना चाहिये, आप तो लिखते हो निशीथचूर्णिमें और दशवैका-लिकबृहद्वृत्तिमें अधिकमास दिनोंकी गिनतीमें सिद्ध करके बतलाया है, फिर यहां पहले आषाडको चातुर्मासिक व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमेसे क्यौं छोडा? दुसरोंको कहना अधिकमास गिनतीमें लेना चाहिये, और आप उस बातपर अमल नही करना यह भी कोइ इन्साफ है?

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१२ हरेक महिनेके दिन तीस पुरे गिने जाते है, और उसी गिनतीपर धर्मक्रिया किइ जाती है, मगर किसी महिनेमें तीस दिन आते है, किसीमें नही आते, वर्सके बारा महिनेमें और चौमासेके चार महिनेमें सब महिनेके पुरे तीस तीस दिन आते नही. और इस आधारसे किसी चौमासेमें (१२०) दिन पुरे हो सकते नही फिर पचासदिन संवत्सरीके पहलेभी नही रह सकेगें. और इसीतरह संवत्सरीके पीछेभी सीतेरदिन नही रह सकेगें पचास और सीतेरदिनका मेल मिलानेके लिये चाहे उनंतीस दिनका मास आवे उसकेभी तीसदिन और कभी पनराहदिनसे कम दिनका पक्ष आवे तोभी उसके पनरांह दिन गिने जाते है, अगर एसा न करे तो पचास और सीतेर दिनका मेंल आता नही, अन्यमतके पंचांगसे कभी सोलह दिनका पक्ष आजाता है, तो उसकोभी पनरांही दिन गिने जाते है, कभी चौदह दिनका पक्ष आजावे तो उसकोंभी पनरांह दिन गिने जाते है, सबुत हुवा कि क्षयतिथि और वृद्धितिथि गिनतीमें नही लिइ जाती. खरतरगछवालेभी इसी सडकपर चलते है, इसीतरह अधिकमहिनाभी गिनतीमें नही लिया जाता, यह एक सिद्धि बात है, इस बातकों खयालमें लाना नही और कोरापक्ष पकडना क्या फायदा.

१३ अगर चंद्रसंवत्सरपर चलो, तो तीर्थंकर महावीरस्वामीका निर्वाण कार्तिकवदी अमासको हुवा. उस दिन स्वातिनक्षत्र था, और दुसरे वर्सके निर्वाणका दिन तीनसो



Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चोपन दिनसे आयगा, फिर तीनसो साठ दिन वर्सके किस गिनतीसे गिनोगे ? उसके बारेमें खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीके पास किसी जैन आगमका सबुत हो तो पेंश करे. अगर सबुत नही है तो-मंजुर करना पडेगा उनंतीस दिनके महिनेकोभी तीस दिनका महिना गिनना पडता है. और (१२०) दिनका एक चौमासा गिनना पडता है.

१४ अगर सूर्यसंवत्सरपर चलो तो एक मासकी संक्रांति गिनी जाती है, और सूर्यकी चालका एक महिनेका प्रमाण है. कभी एकतीस दिन आ जाते है, जबभी उसको महिना गिनना पडता है, उस जगहभी खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीको कुबुल करना पडेगा कि महिनेके तीस दिन गिननेका प्रमाण है. इस लिये एकतीस दिनकोंभी तीस दिन गिनते है. तीनसो सवापांसट दिनका एक सूर्यसंवत्सर होता है. उस अपेक्षाभी तीनसो साठ दिन गिननेका नही बन सकता. असलमें सूर्यसंवत्सर और चंद्रसंवत्सरका मेंल मिलानेके लिये बीचमेसें अधिक महिना निकालना पडता है, सबुत हुवा जैसे अधिक दिनकों और कम दिनकों व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमे लेते नही. इसीतरह अधिकमहिनेकोंभी चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना, यह एक इन्साफकी बात है, खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी इस बातको खयालमें लेते नही और कह देते है अधिक महिना गिन-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीमें लिया है. बस! यही बात समजनेकी है, अगर कोइ न समजे उसका क्या किया जाय, अकलमंद लोग इस बातकों समज लेवे और सत्य क्या चीज है, उसका इम्तिहान करे.

१५ आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपनी बनाइ हुइ लघुपर्यूषणनिर्णय किताबके पृष्ठ (७) पंक्ति (१२) पर बयान करते है. प्राचीनशास्त्रोंमें दो-चौदसको दो-तेरस बनाना किसी जगह नही लिखा.

जवाब—आप लोग दो-चतुर्दशी आवे जब दो चौदस मानते हो या एक? अगर एक मानते हो तो तपगछवालोंके मंतव्यपर आना पडेगा, अगर दो मानते हो तो फिर जब दो चतुर्दशी आती है, तब दोनों चतुर्दशीके रौज दो दिनके उपवासव्रत क्यौं नही करते? और दोनों दिन पाक्षिक प्रतिक्रमण क्यौं नही करते? पाक्षिक प्रतिक्रमण एकही रौज करना, उपवासभी एकही रौज करना, फिर दो चौदस मानी एसा किसप्रमाणसे कह सकते हो? दो-एकादशी तिथि आती है, तो दो-दिन उपवासव्रत क्यौं नही करते? जब दो पंचमी तिथि आती है तो ज्ञानपंचमीके दो-उपवास क्यौं नही करते? सबुत हुवा आप लोगभी एकपर्व तिथिको व्रतनियमकी अपेक्षा आराधन करते हो दुसरीको नही करते, फिर बात क्या हुइ? बात यही हुइ जो तपगछवाले मानते है, आपके लघुपर्यूषणा निर्णयके पृष्ठ (२५–२६) वगेरा सब मेने देख लिये है. उनमे किसीजगह आपने यह नही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बतलाया कि चातुर्मासिक-वार्षिक और कल्याणिकपर्वकी अपेक्षा गिनतीमे लेना जबतक यह नही बतलासकेगे तबतक आपका कहना कोइ किस इन्साफसे कुबुल करेगा.

१६ फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर सातमें तेहरीर करते है, आपका उत्सूत्र-प्ररूपणाका और प्रत्यक्ष अयुत वा मिथ्या लेखको पीछा खेंच लिजिये, और मिछामिदुकडं प्रगट किजिये, नही तो सभामें शास्त्रार्थ करनेको तयार हो जाइये.

जवाब—इस किताबकी शुरुआतमें लिखीहुइ पहेली दुसरी कलमके मुताबिक दोनों पक्षके संघकी सलाहसे वादी प्रतिवादी सभादक्ष और दंडनायकके जरीये सभा होवे और संघका मेरेपर आमंत्रण आवे तो में सभामें शास्त्रार्थ करनेके लिये आनेको तयार हुं मेरा कौनसा लेख उत्सूत्रप्ररूपणाका अयुत वा मिथ्या था जैनशास्त्रके पाठ देकर बतलाया क्यौं नही, इन्साफ कहता है, आप-अपने ऐसे लेखोंको पीछा खेंच लिजिये, और मिछामीदुकडं प्रगट किजिये, उत्सूत्र-प्ररूपणा किसकी है, इसपर खयाल किजिये, आप हरवख्त लिखते हो कि अधिकमास गिनतीमें लिया है. फिर आप खुद दो आषाड आवे जब एक आषाडको चातुर्मासिक व्रतकी अपेक्षा क्यौं छोड देते हो? पार्श्वनाथ भगवानके जन्म-कल्याणिककी अपेक्षा एक पौषकों क्यौं छोडते हो, दो चैत आवे जब सिद्धचक्रजीके तपकी अपेक्षा पहले चैतको क्यौं छोड देते हो? दो वैशाख आवे जब अखात्रीजपर्वकी अपेक्षा एक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वैशाखकों क्यौं छोड देते हो? गतवर्षमें अन्यमतके पंचांगके आधारसे दो भादवे मानकर पांच महिनेका चौमासा क्यौं माना? खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी मेरे लेखोंके बारेमे हरवख्त लिख देते है कि आपकी किताब पर्यूषणापर्व शास्त्रकारोंके अभिप्रायसे विरुद्ध है. जिनाज्ञाबहार है, और कुयुक्तियोंसे भोलेजीवोंको उन्मार्गमें गेरनेवाली है. मगर में पुछता हुं. इन बातोंकी साबीती क्या है? साबीती कर सकते नही, वृथा लिखना, कौन अकलमंद मंजुर करेगा.

१७ आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर सातमें इसमजमूनकों पेंश करते है कि मानवधर्मसंहिताके पृष्ठ (८००) पर लिखा है अगर अधिकमहिना गिनतीमें लिया जाता हो तो पर्यूषणापर्व दूसरे वर्ष श्रावणमें और इसीतरह अधिकमहिनोंके हिसाबसे उक्तपर्व हमेशां फिरते हुवे चले जायगे, यह लेखभी उत्सूत्रप्ररूपणारूपी है. क्यौंकि जिनेंद्रोने अधिकमहिना आने परभी वर्सारुतुमें पर्यूषणा करना फरमाया है.

जवाब—मेरी बनाइ हुइ मानवधर्मसंहिता किताबका लेख उत्सूत्रप्ररूपणारूप नही, क्यौंकि अधिकमहिना गिनतीमें लेवे तो पर्यूषणापर्व बारह महिनेको कैसे आयगें? तेरह महिनेमे आयगे. आप लोगोंके खयालसे तो बारह महिनेपर आना चाहिये, क्यौं कि एकवर्सके चौमासे तीन होते हैं, दरेक चौमासेके चार महिने गिने जाते हैं. और आपके खयालसे एक चौमासेमें पांच महिने आयगें, या तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बारह महिनोंका वर्स कुबुल करो या अभिवर्द्धित संवत्सरका एक महिना गिनतीमेंसें छोडदो, अगर जैनशास्त्रपर चलते हो तो जिनेंद्रोंने फरमाया है मुताबिक जैनज्योतिषके वर्षा ऋतुमें अधिकमहिना नही आता. फिर आपने अन्यमतके पंचांगपर चलकर गतवर्समें दो भादवे क्यौं माने? जैनशास्त्र-पर चलना तो जैनज्योतिषको मंजुर रखना चाहिये, अब उत्सूत्रप्ररूपणा किसकी है? इसपर खयाल किजिये, मेरी बनाइ हुइ मानवधर्मसंहिताका लेख इस बातपर है कि अधिकमहिना वार्षिकपर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना.

१८ फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर आठकी सूचनामें दुसरेको लिखते है, न्याय-रत्नजी शांतिविजयजीकी भूलोंका प्रकाश होगया है. बांचने लायक है.

जबाब—न्यायरत्न-शांतिविजयजीकी कौन कौनसी भूले थी, शास्त्र सबुतसे पाठ देकर बतलाइ क्यौं नही? दुसरेके लेखोंको बिना सबुत पेंशकिये भूलवाले कहना. अमूक शख्शकी भूलोंका प्रकाश होगया कहना सहज है, मगर साबीत करके बतलाना सहज नहीं है, जैनशास्त्रके पाठ देकर न्यायरत्नकी भूल साबीत किजिये.

१९ आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर छठेमें इस मजमूनकों पेंश करते है, अनेक गछोंके अनेक पूर्वाचार्योंने सामायिकमें प्रथम करेमिभंते उच्चारण किये बाद इरियावही करनेका पाठ कहा है, उस-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संबंधी आवश्यक बृहद्वृत्ति वगेरा सोलह शास्त्रके प्रमाण विज्ञापन नंबर पांचमें प्रगट किये है.

जवाब—अकेला नाम प्रगट करनेसे क्या हुवा? पाठ तो एकभी शास्त्रका नही दिया, अगर आप कोइ जैनशास्त्रका पाठ जाहिर करेंगे तो मेंभी उसके जबाबमे पाठ जाहिर करुंगा. पूर्वपक्षमें पाठ दिये हो तो उत्तरपक्षमें पाठ देना इन्साफ है.

२० फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर आठमें लिखते है, पंचाशकके पूर्वापर संबंधवाले संपूर्ण सामान्य पाठको छोडकर शास्त्रकार महाराजके अभिप्रायको समजेविना थोडासा अधुरा पाठ भोले जीवोंको दिखलाकर वीरप्रभुके विशेषतासे आगमोक्त छह कल्याणिकोंका निषेध करना इत्यादि अनेक बातें आपकी दोनों किताबोंमें शास्त्रविरुद्ध भरीहुइ हैं.

जवाब—मेरी दोनों किताबोंमें कौन कौनसी बातें जैनशास्त्रके विरुद्ध थी. जैनशास्त्रके पाठ देकर बतलाइ क्यौं नही, पंचाशकसूत्रमें तीर्थंकर महावीर स्वामीके पांच कल्याणिक सामान्यतासे कहे है, एसा पाठ जाहिर क्यौं नही किया? पूर्वापरसंबंधवाले संपूर्ण पाठ लिखे क्यौं नहीं? मेने अधुरा पाठ दिया था, तो आपने संपूर्णपाठ लिखकर बतलाया क्यौं नहीं कोरी बाते बनादीइ इसको कौन अकलमंद मंजुर करेगा, दुसरी दलिल यह है कि पंचाशकसूत्रका पाठ अगर सामान्यताका होता तो क्या आपके खरतरगछके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आचार्य श्रीमान् अभयदेवसूरजी इस बातकों नही जानते थे? अगर कहा जाय जानते थे तो फिर उनोंने अपनी बनाइ हुइ पंचाशकसूत्रकी टीकामें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांच कल्याणिक क्यौं फरमाये? और एसा क्यौं नही लिखा कि तेइस तीर्थंकरोंके पांच पांच कल्याणिक है, मगर तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिक जानना, मगर कैसे लिखे? जो बात मूलपाठमें न हो वो टीकामें कहांसे लावे? कल्पसूत्र आचारांगसूत्र या स्थानांगसूत्रमें अगर गर्भापहारकों छठा कल्याणिक कहा होता तो प्राचीन टीकाकार छह कल्याणिक जरूर लिखते, श्रीमान् हरिभद्रसूरि और श्रीमान् अभयदेवसूरिभी लिखते, में खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीकों पूछता हुं आपको अपने खरतरगछके आचार्य श्रीमान् अभयदेवसूरजीके वचन प्रमाण है या नही? अगर प्रमाण है तो पांच कल्याणिक मानना मंजुर करो, अगर प्रमाण नही है, तो बजरीये छापेके अपने हस्ताक्षरकी सहीसे जाहिर करो कि मुजको श्रीमान् अभयदेवसूरिजीके वचन प्रमाण नहीं.

२१ जैनशास्त्रोंमें पंचमीकी संवत्सरी करना कल्पसूत्रके पाठसे ठीक है, और उसी कल्पसूत्रके अंतराविसे कप्पइ इस पाठसे चतुर्थीकी संवत्सरी करनाभी ठीक है, दोंनों पक्षमे कोइ पक्ष जूठा है. एसा कहना नही बन सकता, जैनशास्त्र कल्पसूत्रकी अपेक्षा दोंनों बात ठीक है. अगर कोइ महाशय पंचमी तिथि उलंघनकरके छठके रौज संवत्सरी करे तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यह बात बेंशक! जैनशास्त्रके विरुद्ध कही जायगी, जैनशास्त्र कल्पसूत्रमें जैन मुनिकों श्वेतकपडे पहनना कहा. और साथमें यहभी फरमाया कि पंचमहाव्रत पालना चाहिये, कालांतरसे जब श्वेतकपडे पहननेवाले जैन मुनियोंमें चारित्रधर्मके बारेमें कुछ शिथिलता प्राप्त हुइ, श्रीयुत सत्यविजयजी महाराजने जैनशास्त्र निशीथसूत्र और अनुयोगद्वारसूत्रके पाठसे कपडेको रंग देकर पहनना शुरु किया. और पंचमहाव्रत पालनेका क्रिया उद्धार किया, अगर जमाने हालमेंभी कोइ सफेद कपडे पहननेवाले जैन मुनि पंचमहाव्रत पालना मंजूर रखे तो उनको जैन मुनितरीके मानना चाहिये, श्रद्धा ज्ञान और चारित्ररूप गुणसे काम है. जिसमेंभी श्रद्धागुण सबसे अवलदर्जेपर है. अकेले श्रद्धागुणसे मुक्ति हो सकती है, श्रद्धारहित अकेले द्रव्य चारित्रसे मुक्ति नही हो सकती, इसलेखका मतलब यह निकलाकि सफेद या पीलेकपडेसे आत्महित नही गुणसे आत्महित है.

२२ अंचल गछनायक श्रीमान् महेंद्रसिंहसूरि विरचित बृहत् शतपदीग्रंथका साररूप भाषांतर जो श्रावक रवजी देवराज कछकोडायवालोने छपवाया है, उसके पृष्ठ (१४९) पर जहां खरतरगछके श्रीमान् जिनवल्लभसूरिजीकी नयी आचरणाका बयान दिया है उसमें लिखा है,

"हरिभद्रसूरिये पंचाशकमां पांचज कल्याणिक कह्यां छे, अने अभयदेवसूरिये पण त्यां तेटलांज चर्चा छे. छतां जिनवल्लभसूरिये छठुं कल्याणिक प्ररुप्युं."

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखिये ! इस लेखमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांच कल्याणिक लिखे हैं, पंचाशकसूत्रके मूलपाठमें आचार्य श्रीमान् हरिभद्रसूरिजीभी पांच कल्याणि फरमाते हैं. श्रीमान् अभयदेवसूरिजी जिनको खरतरगछवाले अपने गछमें हुवे बतलाते हैं. वेभी पांचकल्याणिक लिखते है, आचारांगसूत्रकी टीकामें या कल्पसूत्रकी पुरानीटीका जो कि खरतरगछतपगछके निकलेके पहलेकी बनी हुइ हो उनमें किसीमेंभी तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिक नहीं लिखे अगर लिखे हैं तो कोइ बतलावे.

२३ खरतरगछके साधु-साधवी श्रावक-श्राविका प्रतिक्रमणमें उनके गछके जंगमयुगप्रधानश्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजीके नामसे कायोत्सर्ग करते हैं, मगर इन्साफ कहता है, इनसे बडे जो गौतमस्वामी सुधर्मस्वामी जंबूस्वामी देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण हरिभद्रसूरि सिद्धसेनदिवाकर और हैमचंद्राचार्य वगेरा कइ जैनाचार्य होगये उनका कायोत्सर्ग क्यौं नहीं करते ? अगर कहा जाय श्रीमान् जिनदत्तसूरिजीने कइ महाशयोंको धर्मोपदेश देकर जैनधर्मी बनाये हैं तो जवाबमें मालुम हो क्या ? दुसरे जैनाचार्योंने नही बनाये ? उनसे बडेबडे जैनाचार्य होगये जिनोंने जैन संघपर बडा उपकार किया है. श्रीमान् जैनाचार्य रत्नप्रभसूरिजीने ओशियाननगरीमें लाखों जैनश्रावक बनाये उनका कायोत्सर्ग क्यौं नहीं करते ! जिनोंने जैन संघपर बडा उपकार किया, अगर उनका कायोत्सर्ग नहीं करते और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपने खरतरगछके जैनाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्री-जिनकुशलसूरिजीका करते हो तो यह एक तरहका पक्षपात हुवा साबीत होगा.

२४ खरतरगछके दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्री-जिनकुशलसूरिजीके चरणोंकी छत्रीयें कइ जगह बनी हुइ हैं. कइ श्रावक श्राविका दादाजीके नामसे प्रसाद चढाना बोलते है. और वो बोला हुवा दादाजीका प्रसाद थोडासा उनके चरणोंके सामने चढाकर बाकीका श्रावकोंको बांट देते है. इसी तरह नारियल तोडकर थोडासा टुकडा चढाकर बाकीका बांट देते है. जैनशास्त्रोंमें देवद्रव्य गुरुद्रव्य और धर्मद्रव्य आप नही खाना चाहिये. साबीत नारियल या शेर दोशेर पांचशेर मिठाइ जितनी चीजे दादाजीके निमित्त लाये हो वो पुरेपुरी चढा देना चाहिये क्यौं कि वो चीज गुरुद्रव्य हो गइ. उसका खाना जाइज नहीं. अगर कहा जाय दादाजी मुक्ति नही पाये हैं. देवलोग गये हैं. उस भावनासे हम मानते हैं. और नैवेद्य (प्रसाद) चढाते हैं तो यह बात जैनशास्त्रसे खिलाफ है, जैनशास्त्रमें धर्मगुरुको धर्मगुरुकी भावनासे मानना कहा. देवलोक गये इस भावसें मानना नही कहा. बल्कि! दादाजीने मनुष्य भवमें जो सम्यक् दर्शनज्ञान और चारित्र पाला था उस भावनासे धर्मगुरु समजकर मानना कहा. इस लिये जब उसके चरनोंके सामने जाना तब इछामिक्षमाश्रमण कहकर तीन दफे वंदना करना. अभुठीयो अभ्यंतर खामना और जो नैवेद्य यानी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रसाद लेगये हो वो पुरेपुरा चढा देना, जो जो श्रावक धन दौलत पुत्रपरिवार वगेराके लिये वंदन नमन करते है प्रसाद चढाते है यह ठीक नही. दादाजीको यानी धर्मगुरुको मोक्ष निमित्त मानना चाहिये. संसारके कार्यके नही.

## खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीके विज्ञापन नंबर नवमेका जवाब और अधिकमासके बारेमें शास्त्रार्थके लिये जाहिर सूचना.

१ खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर नवमें लिखते हैं, "न्यायरत्नजी शांतिविजयजी हारगये."

जवाब—सभा हुइ नहीं, शास्त्रार्थ किया नहीं, फिर हार जितके ठहरावका पास किसने कर दिया, अपने आपसे किसीको हार गये कह देना गेर इन्साफ है, दुनिया जूठ सचके देखनेके लिये एक आइना हैं, जाननेवाले बखूबी जान सकेंगे कि सभा हुइ नहीं, फिर हारजीत कैसे हो सके.

२ आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर नवमें बयान करते हैं, शास्त्रार्थ आपका और मेरा है, इसमें बंबइके संघको वा आगेवानोंको बीचमें लानेकी जरुरत नहीं.

जवाब—शास्त्रार्थ करना और फिर जैनसंघकी जरुरत नहीं, यह कैसे बन सकेगा, श्रीयुत मुनि मणिसागरजी कहते है, संघकी जरुरत नहीं में कहता हूं, यह चर्चा सब जैनसंघके फायदे की है, कीसी एकके लिये नहीं फिर संघकी जरुरत क्यौं नहीं. मेरे खयालसे संघकी निहायत जरुरत है,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अकेले बेठकर शास्त्रार्थ किया तो संघको क्या फायदा हुवा, अगर संघकी जरुरत नहीं तो फिर विज्ञापन वगेरा लेख किनको दिखलानेके लिये छपवाये जाते है इस लिये वादी प्रतिवादी सभादक्ष दंडनायक और साक्षीके जरीये सभा किइजाय और संघका मेरेपर आमंत्रण आवे तो में सभामें शास्त्रार्थके लिये आनेको तयार हूं, चौमासेके लिये दुसरे शहरकी विनति है. हिंदी आषाढवदी गुजराती जेठवदी त्रयोदसीके रौज दुसरी जगह जाना होगा.

३ सभा होनेपर हारजीत किसकी होती हैं और मरीचि तथा जमालिकी तरह उत्सूत्र प्ररुपणा किसकी है मालुम हो जायगा. जाहिर चर्चाके विषयकी हस्ताक्षरसे लिखी हुइ खासगी चिठीयोंके जवाब देना में गेर इन्साफ समजता हूं, इसीलिये आपकी रजिष्टरी किइ हुइ चिठीकाभी जवाब मेंने नहीं दिया था ब-जरीये छापेके जो कुछ पुछा होता तो जवाब देता आगे आपने अपने विज्ञापन नंबर नवमें लिखा है ताकात हो तो बंबइकी पुलिसचोकी कोतवालीमें शास्त्रार्थ करनेको आवो.

जवाब—कोतवालीमें और पुलिसचोकीमें शास्त्रार्थ करना आप मुनासिब समजते होगे मुजे तो बंबइके जैनसंघकी सलाहसे धर्मस्थानमें पंडितोंकी सभामें शास्त्रार्थ करना मुनासिब दिखाइ देता है.

४ मेरी बनाइ हुइ किताब पर्यूषण पर्वनिर्णय छपेको आज करीब नव महिने हो गये और दुसरी किताब अधिक-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासनिर्णय छपेको पांच महिने हो गये दोंनो किताबोंके पृष्ठ (५६) हुवे हैं इनके दरेक बयानका पुरे पुरा जवाब दीजिये. एक दो छोटे छोटे विज्ञापन छपवा दिये इससे मेरी किताबका जवाब नहीं हो सकता.

५ मेरी तर्फसे बनी हुइ तीसरी किताब बंबइमें छप रही है, थोडे रौजमें आप लोगोंके सामने आ जायगी, उसकाभी माकुल जवाब दिजिये गा.

## दुसरी दफे–जाहिर सूचना.

१–कलम पहेली,–आम जैनश्वेतांबरसमाजको मालुम होगा, मेने–अधिकमहिनेके वारेमें शास्त्रार्थकरनेके लिये पनरांह रौजकी मुदत देकर एक इस्तिहार छपवाया था, और शहर बंबइमें बांट दिया था, हिंदके बडे बडे शहरमें ब–जरीये डाकके रवाना करके मुस्तहेर करवा दिया था, और अखवारे जैनमें उसकी जाहिरातभी देदिइथी, जिससे आम जैन श्वेतांबरसमाजकों मालुम हो गया होगा, अधिकमासके बारेमें सभा हुइ नही, शास्त्रार्थ हुवा नही फिर किसीकी हार जीतका कहना अकलमंदोंके नजदीक गेरमुमकीन है.

२–कलम दुसरी,–मेरा कयाम चौमासे भर थानेमे रहेगा, चुनाचे! दुसरे दो–शहरोंके श्रावकोंकी आर्जू थी मगर मेने यहां थानेमेंही वारीश गुजारना मुकरर किया है, दुसरा सबब–थानेके जैन श्वेतांबरश्रावकोंका इरादा है कि–यहां–जो–थानेमें पुराना जैनतीर्थ जमाने श्रीपालजीके था, वों जमीनदोस्त हो गया, उसका फिर उद्धार कराना, इसलियेभी मेरा कयाम यहां रहेगा, जो जो सवाल तपगछ–खरतर गछके बारेमें मेरे नजदीक पेंश होगें,–में–उनका माकुल जबाब देता रहूं गा.

३–कलम तीसरी,–आगे खरतर गछके मुनि–मणिसागरजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अपने इस्तिहार नंबर दसमें बयान करते है, आप बंबइमें हरवख्त आते जाते है, फिर शास्त्रार्थके लिये खडे क्यौं नही होते, जबाबमें मालुम हो, वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक और साक्षीके जरीये दोनोंपक्षके संघकी सलाहसे अगर सभा होवे, और संघका मेरेपर बुलाना आवे तो-में-शास्त्रार्थके लिये आनेकों खडा हुं, और यह बात मेने अवलके इस्तिहारमेंभी जाहिर कर दिइ है, फिर शास्त्रार्थके लिये खडे क्यौं नही होते एसा कहना किसीको लाजिम नही, मुताबिक मेरी सूचनाके अगर सभा किइ जाय और-में-उसमें हाजिर-न-हुं-तो मुजे आप लोग कुछ कह सकते हो, यूं-तो चश्मोंकी तलाशीके लिये डोकतरकी मुलाकात लेनेको और-जो-पुस्तक छपता है, उसके प्रुफ देखनेको मेरा आना बंबइमें होता रहेता है, मगर वो-काम करके शामकों वापीस थाने लोट आता हुं.

४-कलम चोथी-फिर खरतर गछके मुनि-मणिसागरजी अपने इस्तिहार नंबर दसमें तेहरीर करते है, सभा करनेका मंजुर किये विना किसीके लंबे चोडे लेखका जबाब नही दिया जायगा.

• जबाब—यह लेख जाहिर करता है, जबाब देनेवाले अब जबाब देनेसे इनकार करते हैं, में-पुछता हुं! इतने ही से क्यौं थक गये.

कलम—५-६-७-८ इस लिये नही लिखी कि-इसका मजमून इस किताबमें और अलग छपे हुवे इस्तिहारमें आगया है.

९-कलम नवमी-फिर खरतर गछके मुनि मणिसागरजी अपने इस्तिहार नंबर दसमे तेहरीर करतेहै,-यह विवाद साधुओंका है, (जबाब) अकेले साधुओंका नही,बल्कि! सब जैनसमाजका है, और यह चर्चा सब जैनसंघके फायदेकी है, इसीलिये कहा जाता है-सभा करना, सब जैनसंघका काम है, कोइ अकेला कहे कि-में-सभा करुं तो यह बात नही हो सकती, जब गये बर्स पौष महिनेमें मेरी और मणिसागरजीकी मुलाकात दादरमें हुइ थी,-दुसरी दफे वालकेश्वरमेंभी मीले थे, मेने वही बात कही थी,-जो उपर लिख चुका हुं.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१०–कलम दसमी, मेने जो खरतर गछ समीक्षा किताब बनाइ है, उसकी जाहिर खबर अधिकमास निर्णय किताबमें छपी हुइ है, आपने पढी होगी, उसमें खरतर गछवालोंकी तर्फसे बनी हुइ किताब प्रश्नोत्तर विचार–हर्षहृदयदर्पण–और प्रश्नोत्तरमंजरीका जवाब दर्ज कर दिया है! आप जो बृहत्पर्यूषण निर्णयग्रंथ बनाते थे, उसका क्या हुवा? कइ वर्स हो गये, अबतक जाहिर क्यों नही किया? जब आपका मजकुरग्रंथ जाहिर होगा, फोरन? मेरा बनाया हुवा, खरतर गछ समीक्षा छपकर जाहिर हो जायगा आप ऐसा हर्गिज–न–समजे तप गछके मंतव्यपर कोइ आक्षेप करे और शांतिविजयजी उसका जबाब–न–देवे.

११–कलम ग्यारहमी–आप मेरी दोनों किताबोंकी एक भी भूल बतला सके नही, बारां तेरां भूले बतलाना तो दुर रहा, आपके विज्ञापन नंबर सातमेंका जबाब मेरी तीसरी किताबमें छप रहाहै, मेरी दोनों किताबोंके दरेक बयानका पुरा जबाब आप देते नहीं, सभामें देयगे ऐसा कहकर बातको लंबाते हो, मगर इन्साफ कहता है, जबाब भी दिजिये, और सभा होवे जब शास्त्रार्थभी किजिये सभा होगी तब जबाब देयगे, एसा कहकर जबाब–न देना ठीक नही.

१२–कलम बारहमी–फिर खरतर गछके मुनि मणिसागरजी अपने इस्तिहार नंबर दसमे इस मजमूनको पेंश करते है, कि– आपकी दोंनों किताबोंमें जैसी उत्सूत्रता भरी हुइ है, वेसी तीसरी किताबमें भी भरी होगी.

जबाब—कुछ शास्त्र सबुत दे सकते हो–या–कोरी बातें ही बातें है! शास्त्र सबुत देना नही, और दूसरेके लेखको कहदेना उत्सूत्र प्ररूपणा हैं यह कौन अकलमंद मंजुर करेगा? इन्साफ कहता है, शास्त्र सबुत देकर जबाब दिया करो.

१३–कलम तेहरमी–अब–में–यहां थानेमें चौमासेतक मुकीम हूं, वा–कायदा सभाके जरीये सभा करना–या–ब–जरीये छापेके सवाल जबाब करते रहना दोनोंमेंसे किसीतरह मेरा इनकार नही, चाहे जिसतरह पेंश आइ ये.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

# जाहिरखबर.

## खरतरगछसमीक्षाग्रंथ.

मजकुर ग्रंथ मेरी तर्फसे बनरहा है, इसमें छह कल्याणिकके लिये माकुल जवाब दर्ज है, जैनशास्त्रोंमें हरेक तीर्थकरोंके पांच कल्याणिक होते हैं, नवांगसूत्रवृत्तिकार श्रीमान् अभयदेवसूरिजीनें पांचाशकसूत्रकी टीकामें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिक फरमाये है. जिस साल अधिकमहिना आवे तो उसको चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिकपर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नहीं लेना. यह बात जैनशास्त्रके पाठसे साबीत कर दिइ है. सामायिक लेतेवख्त इर्यापथिका पाठ पहिले और करेमिभंतेका पाठ पीछे बोलना, मुताबिक जैनशास्त्रोंके फरमानसे सिद्ध कर दिया है, जैन मुनिको व्याख्यानके वख्त या तमामदिन मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा. इस बातकोभी इसमें तेहरीर किइ है. दादाजीके सामने नैवेद्य चढाया हूवा, गुरुद्रव्य होगया. और गुरुद्रव्य नही खाना चाहिये, इसकाभी खुलासा इसमें दिया है.

खरतरगछके श्रीजिनप्रभसूरिजीने अपने बनाये हुवे ग्रंथमें तपगछके बारेमें जो कुछ लिखा है, उसका जवाब इसमें दर्ज किया है, किताव रत्नसागर मोहनगुणमालामें खरतरगछके उपाध्याय श्रीमोहनलालजीने जो तपगछ खरतरगछके बारेमें लिखान किया है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उसका जवाबभी इसमें सामील है, किताब स्याद्वादअनुभवरत्नाकरमें खरतरगछके मुनि श्रीयुत चिदानंदजीने गछादिव्यवस्था निर्णयमें जो कुछ लिखा है, उसका जवाबभी इसमें रोशन है, किताब महाजन वंशमुक्तावलीमें ग्रंथकर्ताने जो कुछ मजमून गछके संबंधमें पेंश किया है, उसका जवाबभी इसमें तेहरीर है, किताब प्रश्नोत्तर मंजरीमें और प्रश्नोत्तर विचारमें खरतरगछके पंन्यास श्रीकेशरमुनिजी गणीने तपगछ खरतरगछके बारेमें जो कुछ लेख लिखा है उसका जवाबभी इसमें मौजूद है. जिसको पढकर जिज्ञासु लोग खुश होंगे. इतना लेख हाल तयार है, खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीका बनाया हुवा, बृहत्पर्यूषण निर्णयग्रंथ जब मुजकों मीलेगा, उसको देखकर उसका जवाबभी इसमें जोड दिया जायगा, इस किताबमें कोइ अपशब्द नही लिखा है. जैनशास्त्रोके पाठ और दाखले दलिलोंसे जवाब लिखा गया है. जो कोइ जैन श्वेतांबर श्रावक इस ग्रंथको अपने खर्चसे छपवाना चाहे तो उनका नाम प्रकाशकतरीके लिखा जायगा, अगर कोइ कहे ग्रंथका मेटर हमको भेजो देखकर लिखेगे. तो जवाबमें मालुम हो मेटर किसको भेजा नहीं जायगा. जिसकी मरजी हो रुबरु आनकर देखजावे. और खर्चा पेंश करे. उनका नाम प्रकाशकतरीके लिखा जायगा.

ब-कलम—जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा,
विद्यासागर न्यायरत्न मुनिशांतिविजयजी,
मुकाम थाणा, मुल्क कोकन.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com